हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(प्राचीन काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) जाइत पेखल नहाएलि गोरी।कति सयँ रूप धनि आनलि चोरी।
केस निगारइत बह जल धारा। चमर गरए जनि मोतिन हारा।।

(ख) मुख मनोहर अधर रंगे, फूललि मधुरी कमल संगे।
लोचन जुगल भृंग अकारे, मधुक मातल उजए न पारे।।

(ग) ना कछु किया न करहिंगे ना करनैं जोग सरीर।
जो कछु किया सु हरि किया, भया कबीर कबीर।।

(घ) तू तू करता तू भया, मुझमें रही न हूँ।
वारी तेरे नाँउ परि, जित देखौं तित तूँ।।

(ङ) फरीदा जो तै मारिनि मुकियाँ, नन्हा न मारे घुंमि।
आपन डै धरि जाइये, पैर तिन्हा चे चुंमि।।

(च) फरीदा वारि पराइअै, वेसणां सांई मझै न देहि।
जे तू इबै न रषसी, जीव सरीरहू लेहु।।

२. विद्यापति की काव्यगत विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए। २०

३. विद्यापति की भक्ति–भावना पर प्रकाश डालिए। २०

४. 'कबीर रहस्यवादी कवि हैं'–सोदाहरण लिखिए। २०

(कृपया पन्ना उलटिए)

५. कबीर की काव्यभाषा पर एक निबन्ध लिखिए। २०

६. शेख फरीद की काव्यकला पर प्रकाश डालिए। २०

७. सूफी काव्य परम्परा में शेख फरीद का क्या स्थान है, स्पष्ट कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(भारतीय साहित्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना– खण्ड (क) से तीन और खण्ड (ख) से दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. रीतिकालीन किसी एक आचार्य की काव्यशास्त्रीय मान्यताओं पर प्रकाश डालिए।

२. नन्ददुलारे वाजपेयी अथवा डॉ० नगेन्द्र के समीक्षा सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।

३. काव्यानुशीलन में अलंकार सम्प्रदाय के योगदान को रेखांकित कीजिए।

४. काव्य-प्रयोजन के सम्बन्ध में विभिन्न आचार्यों के मतों का उल्लेख करते हुए सबसे अधिक उपयुक्त मत पर विचार कीजिए।

५. हिन्दी-आलोचना के वर्तमान स्वरूप की विवेचना कीजिए।

खण्ड (ख)

६. अरस्तू अथवा टी०एस० इलियट के आलोचना सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।

७. 'पाश्चात्य समीक्षा के मानदण्ड' पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

८. काव्यशास्त्र की समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

कबीरदास

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं चार की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) सदगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार,
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार।

(ख) राम नाम के पटतरै, देबो कौ कछु नाहि।
क्या गुरु लै संतोखिये, हौंस रही मन माँहि।।

(ग) नां गुर मिला न सिख मिला, लालच खेला डाव।
दोनौं बूड़े धार मैं, चढ़ि पाथर की नाव।।

(घ) पांडे कौन कुमति ताहि लागी, तू राम न जपहि अभागी।
राम नाम तत समझत नाँही, अंति पड़ै मुखि छारा।
वेद पढ़याँ का यह फल पांडे, सब घटि देखे रामा।
जन्म-मरण कै तौ तूँ छूटै, सुफल हूंहि सब कामाँ।
जीव बधत अरु धरम कहत हौ, अधरम कहाँ है भाई।
आपन तौ मुनिजन हवै बैठे, का सनि कहौ कसाई।
नारद कहैं व्यास व्यास यों भाषै, सुखदेव पूंछो जाई।
कहै कबीर कुमति तब छूटै, जे रहौ राम ल्यौ लाई।।

(ङ) पंडित बाद बदैं ते झूठा।
राम कहा दुनिया गति पावै, षांड़ कहा मुख मीठा।

(कृपया पन्ना उलटिए)

पावक कहाँ पाव जे दाझै, जल कहि त्रिषा बुझाई।
भोजन कहाँ भूख जे भाजै, तौ सब काई तिरि जाई।
नर के साथ सूवा हरि बोले, हरि परिताप न जानै।
जो कबहूं उड़ि जाई जंगल में, बहुरि न सुरतै आनै।
सांची प्रीति विषि माया सूँ, हरि भगतीन सूँ हांसी।
कहै कबीर प्रेम नहि उपजै, बाँध्यो जमपुर जासी।।

(च) लोका जानि न भूलो भाई।
खालिक खलक खलक मैं खालिक, सब घट रह्यो समाई।
अला एकै नूर उपनाया, ताकी कैसी निंदा।
ता नूर थैं सब जग कीया कौन भला कौन मंदा।
ता अला की गति नहि जांनी, गुरि गुड़ दीया मीठा।
कहै कबीर मैं पूरा पाया, सब घटि साहिब दीठा।।

(छ) माधौ कब करिहौ दया।
काम क्रोध अहंकर व्यापै, न छूटै माया
उतपति ब्यंद भयो जा दिन ते, कबहूँ सच नहि पायो।
पंच चोर संगि लाइ दिए हैं, इन संगि जनम गंवायो।
तन-मन डस्यो भुजंग भामिनी, लहरी वार न पारा।
सो गारड़ू मिल्यो नहिं कबहूं, पसर्‌यो विष विकराला।
कहै कबीर यहु कांसू कहिये, यह दुख कोई न जानै।
देहु दीदार विकार दूरि करि, तब मेरा मन मानै।।

२. 'कबीर एक समाज-सुधारक थे'-सिद्ध कीजिए। २०

३. कबीर के अखण्ड एवं क्रान्तिकारी रूप को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।२०

४. कबीर ने मानव-समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का अथक प्रयास किया है व्याख्या कीजिए। २०

५. कबीर की भक्तिभावना का विश्लेषण कीजिए। २०

६. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर थे' ये कथन किसका है एवं इस कथन की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। २०

उतृ मा । ङ २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा-सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य - प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

सूरदास

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना-प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पदों में से किन्हीं चार की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए- ४०

(क) चरन कमल बंदौ हरिराई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई।।
बहिरौ सुनै गूँग पुनि बोलै, रंक चले सिर छत्र धराई।
सूरदास, स्वामी करुनामय बार बार बंदौ तिहि पाई।।

(ख) सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुन चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किए।।
चारु कपोल लोल-लोचन, गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन, मादक मधुहिं पिए।।
कठुला कंठ, वज्र केहरि-नख, राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर, एकौ पल इहि सुख, का सत कलप जिए।।

(ग) मइया! कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी।।
तू जु कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वइहै लाबी मोटी।
काढ़त गुहत, न्हवावत जइहै नागिन सी भुइँ लोटी।।
काचौं दूध पियावत पचि पचि देति न माखन रोटी।
सूरज चिरजीवौ दोउ भइया, हरि हलधर की जोटी।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(घ) मइया! हौं न चरइहौं गाइ।
सिगरे ग्वाल विरावत मोसों, मेरे पाँइ पिराइ।।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिँ, अपनी सौंह दिवाइ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालिन, गारी देति रिसाइ।।
मैं पठवति अपने लरिकाकौं, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिँगाइ।।

(ङ) पिय-बिनु नागिनि कारी रात।
जौ कहुँ जामिनि उवति जुन्हैया, डसि उलटी ह्वै जात।।
जंत्र न फुरत, मंत्र नहिँ लागत, प्रीति सिरानी जात ।
सूर, स्याम बिनु बिकल बिरहिनी, मुरि मुरि लहरैँ खात।।

(च) सँदेसन मधुवन-कूप भरे।
अपने तौ पठवत नहिँ मोहन, हमरे फिरि न फिरे।।
जिते पथिक पठए मधुबन कौँ, बहुरि न सोध करे।
कै वै स्याम सिखाइ प्रबोधे, कै कहुँ बीच मरे।।
कागद गरे, मेघ मसि खूटी सर दव लागि जरे।
सेवक सूर, लिखन कौँ आँधौँ, पलक कपाट अरे।।

२. सूरदास की दार्शनिक विचारधारा पर प्रकाश डालिए। २०

३. भ्रमरगीत काव्य परम्परा में सूर के भ्रमरगीत का स्थान निर्धारित कीजिए। २०

४. सूर के शृंगार-वर्णन की विशेषताएँ प्रतिपादित कीजिए। २०

५. सूर की भक्ति-पद्धति का विवेचन कीजिए। २०

६. सूरसागर के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्रांकन कीजिए। २०

७. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए :- २०
(क) मुरली माधुरी। (ख) पुष्टिमार्ग।
(ग) दृष्टिकूट। (घ) साहित्य लहरी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

हिन्दी पत्रकारिता

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–खण्ड (क) और खण्ड (ख) से दो-दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। खण्ड (ग) से एक प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. हिन्दी के प्रथम समाचारपत्र का नाम बताते हुए, उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

२. 'हिन्दी समाचार-चैनल सिद्धान्तविहीनता की ओर'-इसे अपने तर्कों और तथ्यों से सिद्ध कीजिए।

३. स्वतन्त्रता-संग्राम के समय हस्तलिखित पत्रकारिता की उपयोगिता और महत्ता पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (ख)

४. हिन्दी-पत्रकारिता के लिए समग्र समाचार-संकलन प्रक्रियाओं को समझाइए।

५. एक हिन्दी-समाचारपत्र के प्रथम पृष्ठ की साज-सज्जा से अवगत कराइए।

६. किसी समाचारपत्र में शीर्षक की क्या महत्ता है, इसे सोदाहरण समझाइए।

खण्ड (ग)

७. मान लीजिए, आप किसी समाचारपत्र के लिए डेस्क-प्रभारी के रूप में काम कर रहे हों और आपके पास अति महत्त्व का विस्तृत समाचार आया है। आपको उसे संक्षेप में करना है। इसके लिए आप क्या करेंगे?

८. निम्नांकित विषयों में से किन्हीं दो पर अपनी सार्थक टिप्पणी कीजिए—
(क) अनुवाद-कला।
(ख) इन्स्ट्राग्राम।
(ग) रेडियो एंकरिंग।
(घ) इण्टरनेट।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

तुलसीदास

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं चार की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– ४०

(क) लगे कहन हरिकथा रसाला। दच्छ प्रजेस भए तेहि काला।।
देखा बिधि बिचारि सब लायक। दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक।।
बड़ अधिकार दच्छ जब पावा। अति अभिमानु हृदयँ तब आवा।।
नहिं कोउ अस जनमा जगमाहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं।।

(ख) मन! माधव को नेकु निहारहिं।
सुनु सठ, सदा रंक के धनज्यों, छिन–छिन प्रभुहिं सभारहिं।।
सोभा–सील–ग्यान–गुन–मन्दिर सुंदर परम उदारहि।
रंजन संत, अखिल अघ–गंजन भंजन विषय–बिकारहि।।
जो बिनु जोग–जग्य–व्रत–संयम गयो चहै भव–पारहि।
तौ जनि तुलसिदास निसि–बासर हरिपद–कमल बिसारहि।।

(ग) पुर–तें निकसी रघुबीर–बधू, धरि धीर दए मग ज्यौं डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूख गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति हैं चलनो अब केतिक पर्णकुटी करिहौं कित ह्वै।
तिय–की लखि आतुरता, पिय–की अँखियाँ अति चारु, चलीं जल च्वै।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(घ) अनिमादि, सारद, सैल नंदिनि बाल लालहिं पालहीं।
भरि जनम जे पाए न ते परितोष उमा रमा लहीं।।
निज लोक बिसरे लोकपति, घर–की न चर्चा चालहीं।
'तुलसी' तपत तिहुँ ताप जग, जनु प्रभु–छठी छाया लहीं।।

(ङ) चित्रकूट पय–तीर सो सुर–तरु बास।
लखन–राम–सिय सुमिरहु तुलसीदास।।
पय नहाह, फल खाहु, परिहरिय आस।
सीय–राम–पद सुमिरहु तुलसीदास।।

२. तुलसीदास का जीवन–परिचय उनकी रचनाओं के आधार पर लिखिए। २०

३. 'सुन्दर काण्ड' के आधार पर उसके वर्णित प्रसंगों की सोदाहरण मूल्यांकन कीजिए। २०

४. विनय–पत्रिका के गीति–काव्य पर उसकी भाषा–शैली का चित्रण कीजिए। २०

५. बरवै–रामायण के छन्द–विधान पर सोदाहरण मूल्यांकन कीजिए। २०

६. तुलसी की सद्गुणोपासना पर विस्तृत प्रकाश डालिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

व्याकरण

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना—किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

१. हिन्दी व्याकरणशास्त्र का पाणिनि किसे कहा जाता है? स्पष्ट कीजिए।

२. भारतीय व्याकरण शास्त्र की परम्परा पर प्रकाश डालिए।

३. हिन्दी की व्याकरणिक संरचना को व्याख्यायित करते हुए उसके स्वरूपों को स्पष्ट कीजिए।

४. पाणिनि–पूर्व संस्कृत व्याकरण परम्परा पर प्रकाश डालिए।

५.(अ)सामासिक पद भेंड़–बकरी में कौन–सा समास प्रयुक्त है।

(क) द्वंद्व समास। (ख) अव्ययीभाव समास।

(ग) तत्पुरुष समास। (घ)कर्मधारय समास।

(ब) 'उसने यह घटना आँख से देखी' वाक्य में कौन–सा कारक प्रयुक्त है?

(क) अधिकरण कारक। (ख) अपादान कारक।

(ग) करण कारक। (घ) सम्प्रदान कारक।

(स) निम्नलिखित में कौन 'जाति वाचक' संज्ञा है?

(क) लड़का। (ख) हिमालय। (ग) गंगा। (घ) राधा।

(द) हिन्दी किस भाषा–परिवार की भाषा है?

६. शब्द रचना का अर्थ अभिव्यक्त करते हुए शब्द प्रकारों को उल्लिखित कीजिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

जयशंकर प्रसाद

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना– प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– २०

(क) "यह नीड़ मनोहर कृतियों का यह विश्व–कर्म रंगस्थल है,
है परंपरा लग रही यहाँ ठहरा जिसमें जितना बल है।
वे कितने ऐसे होते हैं, जो केवल साधन बनते हैं,
आरंभ और परिणामों के संबंध सूत्र से बुनते हैं।"

(ख) बाँधा था विधु को किसने
इन काली जञ्जीरों से
मणि वाले फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरों से?
काली आँखों में कितनी
यौवन के मद की लाली
मानिक–मदिरा से भर दी
किसने नीलम की प्याली?

(ग) जग की सजल कालिमा रजनी में मुखचन्द्र दिखा जाओ।
हृदय–अँधेरी झोली इसमें ज्योति भीख देने आओ।
प्राणों की व्याकुल पुकार पर एक मींड़ ठहरा जाओ।
प्रेम–वेणु की स्वर–लहरी में जीवन–गीत सुना जाओ।

(कृपया पन्ना उलटिए)

स्नेहालिंगन की लतिकाओं की झुरमुट छा जाने दो।

जीवन-घन ! इस जले जगत को वृन्दावन बन जाने दो।

२. निम्नांकित गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– २०

(क) राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्वमानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की व्यापक छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करनेवाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है।

(ख) पाप और कुछ नहीं है यमुना, जिन्हें हम छिपाकर किया चाहते हैं, उन्हीं कर्मों को पाप कह सकते हैं; परन्तु समाज का एक बड़ा भाग उसे यदि व्यवहार्य बना दे, तो वही कर्म हो जाता है, धर्म हो जाता है। देखती नहीं हो, इतने विरुद्ध मत रखनेवाले संसार के मनुष्य अपने-अपने विचारों में धार्मिक बने हैं। जो एक के यहाँ पाप है, वही तो दूसरे के लिए पुण्य है।

(ग) काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका संबंध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है। विश्लेषणात्मक तर्कों से और विकल्प के आरोप से मिलन न होने के कारण आत्मा की मनन-क्रिया जो वाङ्मय रूप में अभिव्यक्त होती है, वह निःसन्देह प्राणमयी और सत्य के उभय लक्षण प्रेय और श्रेय दोनों से परिपूर्ण होती है।

३. 'प्रसाद प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं।' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। २०

४. 'गीतिकाव्य' की दृष्टि से 'लहर' कृति का मूल्यांकन कीजिए। २०

५. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर 'चन्द्रगुप्त' का चरित्रचित्रण कीजिए। २०

६. कामायनी के प्रतीकविधान पर प्रकाश डालिए। २०

७. औपन्यासिक तत्त्वों के आधार पर 'कंकाल' उपन्यास की समीक्षा कीजिए। २०

८. कहानी-कला के आधार पर अपने पाठ्यक्रम में संगृहीत किसी एक कहानी की समीक्षा कीजिए। २०

९. निबन्ध-साहित्य में जयशंकर प्रसाद के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ४

(प्राचीन भाषा)

संस्कृत

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–२०

(क) वरशरणमुपेहि शंकरं वा;
प्रविशय दुर्ग तमं रसातलं वा।
शरवर पर भिन्न सर्वगात्रं;
यम सदनं प्रति यापयाम्यहं त्वाम्।।

(ख) मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

(ग) विपदिधैर्यमथाभ्युदये क्षमाः
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

२. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या हिन्दी में कीजिए–२०

(क) न स्त्रिय भवजानीत नाति विश्रम्भवेत् न गुह्यमनुश्रावयेत्, नाधि कुर्यात्। न सत्तो न गुरून परिवदेत् ना शुचिरभिचार कर्म चैत्य पूज्य पूज्याध्ययेनमभि-निर्वयेत्।।

(ख) 'अहो अस्य महात्मनो दुःखिजने दया स्वसौख्ये निः संगता च सर्वथा नमोस्त्वस्मै महाभागाय सर्वभूतशरव्याय अति विपुल कारुण्याय अप्रमेय सत्वाय इति।

(ग) अथ ज्वलति तस्मिञ्छर्मा कोटरेऽर्ध दग्ध शरीरः स्फुटितेक्षणः करुणं परिदेवयन्पापबुद्धि पिता निश्चक्राम। ततश्च तैः सर्वैः पृष्टः भो किमिदम् इत्युक्ते पाप बुद्धि विचेष्टित सर्वमिदं निवेदयित्वोपरतः।।

३. निम्नलिखित में से किसी एक पाठ का सारांश लिखिए– १०

(कृपया पन्ना उलटिए)

(क) विदुलायाः पुत्रोद्बोधनम्।

(ख) अर्थ पाल चरितम्।

(ग) बुद्धस्यौदार्यम्।

४. (क) प्रथम प्रश्न पत्र में से किसी एक श्लोक का अन्वय लिखिए– १०

(ख) निम्नांकित शब्दों में से किसी एक शब्द के रूप सभी विभक्तियों एवं वचनों में लिखिए– १०

हरिः, मधु, पितृ।

(ग) निम्नांकित धातुओं में से किसी एक धातु का तीनों वचनों में लृट लकार का रूप लिखिए– १०

पठ्, भू, क्री।

५. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विग्रहपूर्वक समास लिखिए– १०

नृपपुत्रः, नीलमुत्पलम्, रामकृष्णौ, पीताम्बरः।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों की नियमोल्लेखपूर्वक सन्धि कीजिए– ५

दैत्य+अरिः, श्री+ईशः, उप+इन्द्रः, मम+एकः।

(ग) निम्नाङ्कित सूक्ति में से किसी एक सूक्ति का भावार्थ हिन्दी में लिखिए– ५

(क) कार्यान्तरे दीर्घ सूत्रता न कर्तव्या।

(ख) यथा वीजं तथा निष्पत्तिः।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा : (साहित्यरत्न) तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ५

(साहित्यिक निबन्ध)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर साहित्यिक निबन्ध १००० शब्दों में लिखिए– ५०

(क) आपका प्रिय कवि।

(ख) साहित्य समाज का दर्पण है।

(ग) राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी।

(घ) प्रयोगवादी कविता।

२. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर साहित्यिक निबन्ध १००० शब्दों में लिखिए– ५०

(क) छायावाद।

(ख) अलंकार सम्प्रदाय।

(ग) हिन्दी कथा साहित्य।

(घ) संचार माध्यम और साहित्य।